This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

अपहरण भाईचारे का

;जन नाट्य मंचऋ अक्टूबर १९८६ऋ ३० मिनटऋ ७ कलाकारद्ध

पात्र विभाजन

१. मदारी
२. जमूरा
३. रिंग मास्टर
४. गुंडा १
५. गुंडा २
६. गुंडा ३
७. भाईचारा

गोलाकार अभिनय-स्थल। जमूरा काली चादर लिए बैठता है। मदारी इधर-उधर घूमकर संवाद बोलता है।

मदारी : बात नहीं जुल्फ़ की सर मरोड़ा सांप का
कैसा कुंडल मार के बैठा है जोड़ा सांप का!
तो मेहरबानो, क़दरदानो, जब यह चमेली की जड़ों में छुप के बैठता है तो इसके काटे का पानी नहीं मांगता, लेकिन इंसान का बच्चा इससे खेलता है... किसलिए पापी पेट के लिए! हां, तो मेहरबानो, क़दरदानो, इससे पहले कि खेल शुरू किया जाए, ज़रा ज़ोर से ताली बजाना। हां, तो जमूरे खेल शुरू किया जाए?

जमूरा : उस्ताद, खेल तो शुरू किया जाए पर लोगों ने ताली बहुत रो-रोकर बजाई है।

मदारी : अबे देश में इतनी मारकाट चल रही है जमूरे, रो के नहीं तो क्या हँस के बजाएंगे। ग़नीमत जान कि ये हमारा खेल देखने आ गए! अगर कर्फ़्यू लगा होता तो क्या कर लेता? लेकिन मेहरबानो, क़दरदानो, मेरे जमूरे में बहुत बुरी आदत है, बच्चा है न! जब तक आप ज़ोर से ताली नहीं बजाएंगे तब तक खेल शुरू नहीं करेगा! हां तो जमूरे लेट जा... गिलि-गिलि गिलि-गिलि फू... उगते सूरज को नमस्कार, डूबते को सलाम, मुसलमान को आदाब, हिंदू को राम-राम, जमूरे! लौट आ।

जमूरा : आ गया!

मदारी : जो पूछेंगे बतलाएगा?

जमूरा : बतलाएगा!

मदारी : और सच-सच बतलाएगा?

जमूरा : एकदम सच बतलाएगा।

मदारी : तो आजकल के हिंदोस्तान का हाल बता।

जमूरा : एक साथ बतला दूं।

मदारी : अबे नहीं, धीरे-धीरे बता। एक साथ बता दिया तो खेल एक ही मिनट में ख़त्म हो जाएगा। बड़ी मुश्किल से तो ये छोटा-सा मजमा इकट्ठा हुआ है। देख, तेरा ध्यान किधर है!

जमूरा : देख लिया।

मदारी : क्या देखा?

जमूरा : मदारी के हाथ में कबूतर।

मदारी : कौन-सा कबूतर?

जमूरा : असील...!

मदारी : क्या बोला, चील?

जमूरा : नहीं असील।

मदारी : ज़िंदा या मरा हुआ?

जमूरा : एकदम ज़िंदा, लेकिन डरा हुआ।

मदारी : तो इसकी चोंच में क्या है?

जमूरा : इसकी चोंच में है बुलेट प्रूफ़!

मदारी : बुलेट प्रूफ़! अबे ये क्या होता है?

जमूरा : उस्ताद, कबूतर ने अपनी सुरक्षा के लिए बुलेट प्रूफ़ जाकिट बनवाई है।

मदारी : अबे किसलिए?

जमूरा : उस्ताद, सरकार तो किसी के जानमाल की रक्षा कर नहीं पा रही है, इसलिए हर कोई अपना इंतज़ाम ख़ुद ही कर रहा है।

मदारी : जमूरे, तेरी बुलेट प्रूफ़ कहां है?

जमूरा : उस्ताद, तुम पे हँसी आती है।

मदारी : ज़बान संभाल के जमूरे, नहीं तो टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। अबे, जनता पार्टी बना दूंगा।

जमूरा : उस्ताद, रोज़ पब्लिक को तमाशा दिखाते हो, अभी तक

ये नहीं समझ पाए कि हम-जैसे रोज़मर्रा कमा के खानेवालों की जान किसी बुलेट प्रूफ़ या बॉडी गार्ड से नहीं बच सकती। हम तो भूख से वैसे ही मर जाते हैं। हमें तो चाहिए भूख प्रूफ़।

मदारी : जमूरे!

जमूरा : आ गया।

मदारी : मैं मदारी क्यूं?

जमूरा : पेट की ख़ातिर।

मदारी : तू जमूरा क्यूं?

जमूरा : पेट की ख़ातिर।

मदारी : खाया क्या।

जमूरा : हवा।

मदारी : पिया क्या?

जमूरा : टूटी का पानी।

मदारी : देखा मेहरबानो, क़दरदानो, इतनी बदअमनी के बावजूद मैंने और मेरे जमूरे ने तो बहुत कुछ खा-पी लिया। अबे अब जनता की तो कुछ सोच।

जमूरा : सोच लिया।

मदारी : क्या सोचा?

जमूरा : ये सब लोग एफ.आई.आर. लिखवाने आए हैं।

मदारी : क्या बकता है?

जमूरा : हां उस्ताद, ये सब लोग किडनैपिंग की रपट लिखवाने आए हैं।

मदारी : किडनैपिंग? यानी अपहरण? अबे किसका अपहरण?

जमूरा : इनके भाईचारे का।

मदारी : ये तो बड़ी सीरियस बात है जमूरे! फ़ौरन दूरदर्शन से खोए हुए व्यक्तियों के बारे में घोषणा करवाता हूं। अख़बार में गुमशुदा की तलाश का विज्ञापन छपवाता हूं।
बता, बदन के कपड़ों का रंग कैसा था?
जेब में कितना पैसा था?
क़द, रंगत, उमर की पहचान?
चेहरे पे तिल या कोई और निशान?

जमूरा : उस्ताद, तुम्हारी अक़्ल पे हूं मैं हैरान। इनका भाईचारा कोई लड़का या मर्द नहीं, नाक, कान, मुंहवाला कोई फर्द नहीं। तुम यूं समझो कि इनका चैनो-आराम खो गया है, सुरक्षा का सारा सामान खो गया है।

मदारी : ये तो और भी सीरियस बात है। जमूरे, भीड़ में खड़े लोगों की मदद करेगा?

जमूरा : करेगा।

मदारी : तो जा, इनके खोए हुए भाईचारे को ढूंढ़ के ला।

जमूरा : उस्ताद, आज से ना तू मेरा गुरु, ना मैं तेरा चेला।

मदारी : अरे क्या करता है? अबे ना मैं राजीव गांधी और ना तू अरुण नेहरू, तेरा-मेरा नाता ऐसे नहीं टूटेगा।

जमूरा : ना, ना, मेरे बस की बात नहीं है।

मदारी : अबे, साहब लोग ख़ुश हुए तो मुंह मांगा इनाम मिलेगा जमूरे!

जमूरा : न! मुझे डर लगता है उस्ताद!

मदारी : अच्छा, तो देख, मैं अपने जादू के ज़ोर से इनके खोए हुए भाईचारे को छुड़ा के लाता हूं। सात समंदर पार मछंदर, अब तू अपने आप कलंदर...

जमूरा : बस, लेने लगे गुरुओं का नाम।

मदारी : अबे, तो मैं जादूगर हूं, जादूगर, मेरे बाप के दादा के परदादा ने अकबर को जादू दिखाया था।

जमूरा : पर राजीव राजा के राज में तुम्हारा जादू नहीं चलेगा।

मदारी : अबे, तो तू ही कुछ कर। फेंक अपनी चद्दर को परे, और कर कुछ ऐसा कमाल, कि पब्लिक हो ख़ुश और देश के दुश्मन पामाल। गिलि-गिलि गिलि-गिलि फू!

जमूरा : हां, तो उस्ताद, अब देख मेरा कमाल।
अपनी रेशमी मूंछों के बालों को ऐंठकर,
उस्ताद गोरखधंधे की पारदर्शी नज़र के कंधों पे बैठकर,
आशीर्वाद लेकर काली कलकत्तेवाली का,
पता लगाऊंगा शांति-चोर मवाली का,
उड़ा के ले गया है भाईचारे को।
भूखा नचाता है मदारी इस बेचारे को।
ख़ाली हाथ लौटता देखकर ज़ालिम दूर से करारी बांग देगा,
उस्ताद गोरखधंधा बदन की खाल खींचकर उस्तानी के ब्लाऊज की तईं खूंटी पे टांग देगा।
तो मेहरबानो, क़दरदानो, अपने दुश्मन को पहचानो।
बता दो कि विदेशी पैसा कहां से आ के कहां को जाता है,
अमरीकन अंबैसी में रोज़ डिनर कौन खाता है,
आग लगानेवाले पोस्टर कौन छपवाता है,
गली-मुहल्लों में त्रिशूल कौन बंटवाता है,
अल्ला-ईश्वर के नाम पर सेनाएं कौन बनवाता है,
कौन ख़ालिस्तान का नारा लगवाता है।
बता दो, बता दो कि ये नाचीज़ भी
जेम्सबांड का दायां-बायां कहलाए।

[रिंग मास्टर आता है।]

रिं.मा. : हे मैन, कम हियर!

जमूरा : हैं जी, मुझे बुला रहे हो?

रिं.मा. : कम हियर मैन, आएम टॉकिन टू यू!

जमूरा : भाई सा'ब, ये क्या कह रहा है?

रिं.मा. : डोंट यू अंडरस्टैंड बडी? आएम टाकिन टू यू! ओ फ़ो, इडर आओ, हम टुम को बुलाटा है।

जमूरा : अरे वाह, ये तो हिंदी बोलता है। हैलो सर, हैलो, ऐंटी शैंटी, फ्लैंटी, मार घैंटी थैंक यू सर, थैंक यू।

[बड़े ज़ोर से हाथ मिलाता है।]

रिं.मा. : थैंक यू, थैंक यू! टुम हमारा मडड करेगा?

जमूरा : ज़रूर करेगा! आप किधर से आया है सर?

रिं.मा. : यूनाइटिड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका।

जमूरा : अमरीका! जहां बड़े-बड़े बम बनते हैं?

रिं.मा. : राइट यू आर पैल, जहां बम बनटे हैं। टो बोलो, हमारा मडड करेगा?

जमूरा : ज़रूर करेगा। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?

रिं.मा. : येस, बटाटा है। हम एक वाइल्ड लाइफ़ का लवर है, यानी जंगली जानवर को प्यार करटा है।

जमूरा : प्यार करता है, यानी पुच-पुच-पुच-पुच?

रिं.मा. : नहीं वैसा नहीं, हम इनका डेकबाल करटा है, उनके काने-पीने का अरेंजमेंट करटा है।

जमूरा : अच्छा! अच्छा! भई कमाल है। ये हुई ना बात। हमारे यहां तो पब्लिक के खाने-पीने का ही इंतज़ाम नहीं हो पाता।

रिं.मा. : टो सोचो। टुमारा वाइल्ड-लाइफ़ का क्या हालत होगा।

जमूरा : सच्ची, बहुत बुरा हाल होगा।

रिं.मा. : हमने सुना है कि टुमारे डेस में एक बहुत कटरनाक जानवर होटा है, जिसका नाम है सैम प्रो डाईएकटा?

जमूरा : सैम प्रो डाईएकटा???

रिं.मा. : येस, सैम प्रो डाईएकटा?

जमूरा : सैम प्रो डाईएकटा? कभी सुनने में तो आया नहीं सर! सैम-सैमप्रौ-सैम्प! हां, हां, हां, हां, हां, समझ गया, कोई ज़हरीला सांप होगा सर!

रिं.मा. : सैम्प व्हॉट सैम्प?

जमूरा : सांप नहीं जानते? वो जो लंबा-सा होता है।

[हाथ से रिं.मा. की तरफ़ फुंकार मारता है।]

रिं.मा. : सैम्प यानी स्नैक? नो, नो, नो, नो, नो, सैम्प नहीं होटा, लेकिन ज़हरीला होटा है, सैम्प से भी जाडा।

जमूरा : सर, आपको सुनने में कोई ग़लती हो गई लगती है। हमारे यहां तो ऐसा कोई जानवर हमने कभी सुना नहीं।

रिं.मा. : होटा है, होटा है, मैन!

जमूरा : तो कोई पहचान बताइए न।

रिं.मा. : पहचान, नाओ लेम्मी सी, लेम्मी सी, येस, आई गॉट इट। वो जिडर भी जाटा है लोग लरने लगटे हैं, एक-दूसरे को मारने लगटे हैं, और, और, और[]येस[]उसके हाट-पैर से नाकून नहीं, ट्रीसूल निकलटे हैं, चाव़ूळ निकलटे हैं, और स्टेनगन निकलटे हैं। अब समजा?

जमूरा : *;डर जाता हैब्द्ध* सर, आप कहीं सांप्रदायिकता की बात तो नहीं कर रहे?

रिं.मा. : येस, येस, मैन, येस, वही टो बोलटा है, सैम प्रो डाईएकटा।

जमूरा : बचाओ, बचाओ, उस्ताद जी!

रिं.मा. : हे! व्हॉट हैपिंड? कहां जाटा है मैन?

जमूरा : अरे भइया, उससे ख़तरनाक जानवर तो कहीं होता ही नहीं। उसका तो नाम सुनते ही मेरी ऊपर की हवा ऊपर से निकल जाती है, और नीचे की नीचे से।

रिं.मा. : गबराने का कोई बात नहीं, हम उसे कंट्रोल करना जानटा है। टुम डरो नहीं, हमें बटाओ वो किडर मिलेगा।

जमूरा : किधर मिलेगा? अरे ये पूछो किधर नहीं मिलेगा। सूअरिया की तरह बियाह रहा है सुसरा। इत्ते बच्चे दिए हैं साले ने कि दिल्ली के चप्पे-चप्पे में फैल गए हैं।

रिं.मा. : *;खुश होकरब्द्ध* अच्छा? इसका मटलब है टुमारे डेस का माहौल उसको सूट करटा है।

जमूरा : अजी बहुत ज़्यादा सूट करता है। सुनते हैं पहले-पहल कोई अंग्रेज़ लाट सा'ब इसे लेकर आया था। फिर तो जी उसने इतने बच्चे, इतने बच्चे दिए कि सारे देश में फैल गए।

रिं.मा. : गुड, गुड, वैरी गुड, लेकिन ये बटाओ, डिल्ली में किडर मिले गा?

जमूरा : सर, पिछले दिनों वहां निकल आया था, फिरोज़शाह कोटला में। उससे पहले भोगल में निकला था, और तिलक नगर में, बड़ी तबाही मचाई साले ने। अरे हम तो तीन दिन घर से ही नहीं निकल सके, धेले की कमाई नहीं हुई। भूखे-प्यासे बैठे रहे। जहां भी निकलता है, ग़रीब आदमी की तो ऐसी की तैसी हो जाती है।

रिं.मा. : अच्छा! अच्छा! लास्ट किडर निकला ठा?

जमूरा : लास्ट? लास्ट तो वहां निकला था, चांदनी चौक में दसहरेवाले दिन।

रिं.मा. : चांदनी चौक में? हम अबी वहां जाटा है।

जमूरा : अरे रे रे रे रे रे रे, क्या करते हो सर? वहां मत जाना, मार डालेगा तुम्हें।

रिं.मा. : हम नहीं डरटा। हम इटनी डूर से उसे डेकने आया है, ज़रूर डेक के जाएगा। उसके लिए कोई गिफ़्ट चोर के जाएगा।

जमूरा : मेरी बात मानो सर! इस चक्कर में मत ही पड़ो। बहुत ख़तरनाक जानवर है। दो साल पहले दिल्ली में निकला

था□तीन दिन में तीन हज़ार लोगों को खा गया और पंजाब में तो रोज़ तीन-चार को चट कर जाता है।

रिं.मा. : अरे मैन, हमने इससे भी ख़तरनाक जानवरों को ट्रेन किया है। अफ़्रीका में एक जानवर होता है□नस्लवाद, टुमारा सैमप्रोडाईएक्टा जैसा ख़तरनाक, लेकिन हमने उसको ट्रेन किया है। टुम हमको नहीं पहचानता। हम हैं दी ग्रेट अमेरिकन सर्कस का मालिक। हम टुमारा सैमप्रोडाईएक्टा को भी ट्रेन करेगा।

जमूरा : ट्रेन करेगा? आप सांप्रदायिकता को ट्रेन करेगा।

रिं.मा. : येस, ऐंड यू विल सी इट।

जमूरा : उसके लिए सरकार से परमिशन लेनी पड़ेगी सर!

रिं.मा. : क्यूं? ये टो हमारा और सैमप्रोडाईएक्टा के बीच का बाट है। इसमें सरकार कहां से आ गया?

जमूरा : लो, इसे यही नहीं मालूम कि इसमें सरकार कहां से आ गई? क्योंकि सरकार ने उसे राष्ट्रीय जंतु घोषित कर दिया है।

रिं.मा. : रियली? राष्ट्रीया जंटू, यू मीन नैशनल ऐनीमल?

जमूरा : येस, नैशनल ऐनीमल, आपने क्या समझ रखा है? जंगली जानवरों का बड़ा ख़याल रखती है हमारी सरकार। खुद प्रधानमंत्री जी बहुत बड़े पशु-प्रेमी हैं। उन्होंने कुछ दिन पहले अयोध्या में ख़ासतौर पर सांप्रदायिकता के लिए, क्या कहते हैं□अभयारण्य बनाया है, रहने की जगह।

रिं.मा. : दैट्स गुड, दैट्स गुड! लेकिन एक जगह बनाने से काम नहीं चलेगा, जगह-जगह बनाना परेगा, हर प्रांट में बनाना परेगा। लेकिन आप लोगों का मुलुक इटना बरा है कि डिल्ली से बैठकर पूरे डेस में सैमप्रोडाईएक्टा की डेकबाल नहीं की जा सकटी, इसलिए हम टो कैटा है कि यहां पर चोटे-चोटे डेस बना डेने चाहिए, और सब डेसों में एक-एक रकवाला बिटा डेना चाहिए।

जमूरा : बिठाया था, बिठाया था सर! सरकार ने पहले पंजाब में मिस्टर भिन्न-भिन्न डरानेवाला को सांप्रदायिकता का इनचार्ज बनाया था।

रिं.मा. : मिस्टर बिन-बिन डरानेवाला अमारा 'इंटरनैशनल पशु-प्रेमी संघ' का मेंबर ठा, बहुत डियर फ्रेंड ठा अमारा, लेकिन बाद में टो उनको मार डिया। क्यूं? क्यूंकि वो भी हमारा बाट कैटा था। सैमप्रोडाईएक्टा के लिए काली स्टान बनाना चाटा था। हम भी कहटा था कि जब टक उसके लिए एम्टी प्लेस यानी काली स्टान नहीं बनेगा, सैमप्रोडाईएक्टा इडर-उडर बटकटा रहेगा।

जमूरा : सर, यह ख़ाली स्थान-भरा स्थान तो आप जानें, मैं तो इतना जानता हूं कि आपको सरकार से परमिशन तो लेनी ही पड़ेगी।

रिं.मा. : टीक है, तो हम परमिशन लेगा। कहां से मिलेगा परमिशन?

जमूरा : उसके लिए तो आपको मंत्री जी से मिलना पड़ेगा।

रिं.मा. : मिलेगा, नो प्रॉबलेम। टुम हमको उनका पटा बटाओ।

जमूरा : हां, हां ज़रूर। आप ऐसा कीजिए कि यहां से सीधे जाइए, और फिर राइट मुड़ जाइए तो वहां पर आपको एक बहुत बड़ी बिल्डिंग नज़र आएगी जिस पर लिखा होगा 'हिंदू सेना भवन।'

रिं.मा. : हिंडू सेना बवन?

जमूरा : यैस, वहां से आप सीधे चले जाइए और फिर राइट मुड़ जाइए तो एक और बिल्डिंग दिखाई देगी। वह है 'फ़ौज-ए-इस्लाम भवन।'

रिं.मा. : फ़ाउज-ए-इस्लाम बवन! ओ. के.!

जमूरा : हां, वहां से राइट मुड़कर सीधे चले जाइए, तो आगे जा के आप 'सिख सेना भवन' पे पहुंच जाएंगे।

रिं.मा. : सीक सेना बवन! ओ. के.!

जमूरा : हां जी, वहां से फिर राइट मुड़ जाइए, फिर सीधे, फिर राइट, फिर सीधे, फिर राइट...

रिं.मा. : सिर्फ़ राइट ही मुड़ना है, लैफ़्ट नहीं!

जमूरा : ना, ना, ना, ना, लैफ़्ट बिल्कुल मत मुड़ना। नहीं तो बंगाल पहुंच जाओगे। वहां ज्योति बसु की सरकार है। उसने तो सांप्रदायिकता को बंगाल की खाड़ी में फेंक दिया है।

रिं.मा. : काड़ी में फेंक दिया है? उसकी हिम्मत कैसे हुई एक मासूम बेसहारा जानवर पर इतना ज़ुलुम करने की?

जमूरा : जंगली जानवर को तो भूल ही जाओ, उसे कहीं पता चल गया कि आप सांप्रदायिकता की मदद करने आ रहे हैं तो आपको भी लात मार के बाहर कर देगा, हां! वह इस मामले में बड़ा सख़्त आदमी है।

रिं.मा. : टीक है, हम डेकेगा, डेक लेगा उसको। उडर में हमारा एक आडमी है, सूबास गिसंग।

जमूरा : घीसिंग? वो तो देखा जाएगा कौन किसको घिसता है, मेरा मतलब, देखता है। अब आप सीधे चले जाओ, जैसा मैंने बताया, राइट मुड़ते जाओ जब तक मंत्री जी के पास न पहुंच जाओ।

रिं.मा. : ओ.के. थैंक यू!

जमूरा : नॉट मैनशन।

रिं.मा. : टा-टा, बाय-बाय सी यू!

□जाता है। जमूरा हाथ हिलाता पीछे हटता है और आगे बढ़ते मदारी से टकराता है।□

मदारी : जमूरे?

जमूरा : *;अमरीकन की तरह बोलता हैद्ध* यैस?

मदारी : अबे कुछ पता चला?

जमूरा : किसका?

मदारी : किसका? अबे जिसे ढूंढ़ने भेजा था तुझे!

जमूरा : हां-हां, वह मंट्री जी से मिलने गए हैं।

मदारी : अच्छा? लो जी। और आप लोग कह रहे थे कि उसका अपहरण हो गया। तो मेहरबान, क़दरदान, आपने सुना? मेरा जमूरा यह ख़बर लाया है कि मंत्री जी से मिलने गया है आपका भाईचारा।

जमूरा : अरे नहीं, नहीं, नहीं, नहीं उस्टाट, बाईचारा नहीं।

मदारी : फिर?

जमूरा : वह ग्रेट अमरीकन सर्कस का मालिक।

मदारी : क्या, क्या, क्या?

जमूरा : ग्रेट अमरीकन सर्कस का मालिक। वो गया है।

मदारी : मंत्री से मिलने?

जमूरा : हां, मैंने तो रास्टा बटाया उसे, वो कहो बचा लिया उसे, वरना साला बाएं मूरकर बंगाल जा रहा था।

मदारी : अबे तुझे भाईचारे को ढूंढ़ने भेजा था या अमरीकनों की मदद करने।

जमूरा : *;फिर जमूरे के अंदाज़ मेंद्ध* भाईचारा, वो तो मैं भूल ही गया उस्ताद!

मदारी : भाईचारे को भूल गया। अबे धरती के आवारा बेटे, अगर तू ही भाईचारे को भूल गया तो इस देश का क्या होगा? जा फिर से ढूंढ़ने जा, पब्लिक इंतज़ार कर रही है।

[दोनों अलग-अलग दिशा में निकलते हैं। तीन गुंडे आते हैं।]

गुंडा-१ : हर, हर महादेव!

गुंडा-२ : नारा-ए-तकबीर, अल्ला हो अकबर!

गुंडा-३ : ख़ालिस्तान ज़िंदाबाद!

[तीनों फ्रीज़ करते हैं। रिं.मा. आता है।]

रिं.मा. : पहले क्या बटाया टा, हिंडू सेना बवन। वो टो यही है। इसमें से किटना अच्चा संगीत सुनाई डे रहा है।

गुंडा-१ : जागो, जागो हिंदुओ, अपनी नींद से जागो, उठो हिंदू राष्ट्र का निर्माण करो। यह देश, यह भारतवर्ष तुम्हारा है। अपने देश में पहले दर्जे के नागरिक के अधिकार पाने के लिए यु(की घोषणा करो। उठो, गर्व से बोलो, 'हम हिंदू हैं' और त्रिशूल धारण करो।

[फ्रीज़ होता है।]

रिं.मा. : गुड, गुड, आई लाइक इट। कितना सुंडर म्यूज़िक है। अच्छा, यहां से बोला ठा राइट टर्न। फिर सीडा, ओ हो हो हो हो। यही होगा वो फ़ाउज-ए-इस्लाम बवन जो उस चोकरा ने बटाया ठा। यहां से बी कुच आवाज़ आटा है।

गुंडा-२ : इस्लाम ख़तरे में है मोमिनो! फिर से जिहाद की तैयारी करो, क्या तुम सिर्फ़ फ़सादों में मारे जाने के लिए पैदा हुए हो? ऐ ख़ुदा के बंदो, ये जान लो कि हिंदुओं की इस हुकूमत में तुम्हें कुछ नहीं मिलनेवाला। तुम्हें अपना हक़ आगे बढ़के छीनना होगा। उठाओ शमशीर-ए-इस्लाम, अपनी हिफ़ाज़त की ख़ातिर, अपनी तरक़्क़ी की ख़ातिर।

[फ्रीज़ होता है।]

रिं.मा. : वाह, वाह किटने सुंदर विचार हैं, किटना जोश है, किटनी डिलेरी है, ऐसे बहाडुर लोग हमें चाहिए सैमप्रोडाईएक्टा को ट्रेन करने के लिए। यहां से फिर राइट मुरना ठा, फिर सीडा, फिर सीक सेना बवन पहुंचना था। लगटा है पहुंच गया। लेकिन इस पर लगे लाउडस्पीकर से क्या आवाज़ आ रही है?

गुंडा-३ : एस मुल्क विच हुण साड्डे वास्ते कोई जगह नई रै गई हैगी। ऐ देश नाशुक्रयां दा देश है। असां एस देश दी ख़ातिर की-की वुळरबानियां दित्तियां, फेर भी इत्थे साड्डी कोई पुच्छ नहीं। हुण असां चुप नहीं बैठणा, असां पंजाब तों हिंदुआं नूं कड्ड के ख़ालिस्तान बनाणा है। उठो मेरे वीरो, चुक लयो बंदूकां ते तलवारां, ते धरम यु(शुरू करो।

रिं.मा. : अरे, ये तो बिल्कुल हमारा डियर डिपारटिड फ्रेंड बिन-बिन डराने वाला की तरह बोलटा है। इन टीनों को कॉनटैक्ट करना होगा। हमारा काम टो इनसे ही बन जाएगा। गुड, गुड वैरी गुड। लेकिन पैले मंट्री से बाट करके डेकटा है।

[जाता है। तीनों फिर नारे लगाकर एक साथ अपने पहलेवाले भाषण शुरू करते हैं। भाईचारा आता है। उन्हें बीच में ही टोककर]

भाईचारा : ख़ामोश, ख़ामोश, ख़ामोश। नहीं बंटेंगे यहां पर त्रिशूल, नहीं उठेंगे ख़ालिस्तान के नारे, नहीं निकलेंगी मज़हबी तलवारें। ये हिंदोस्तान है। यहां पर सब अमन-चैन से रहेंगे। हिंदू-मुस्लिम, सिख, ईसाई, भाई-भाई की तरह रहेंगे।

तीनों : कौन है तू?

भाईचारा : मैं हूं भाईचारा, हिंदोस्तान की एकता का रखवाला, जब तक मैं ज़िंदा हूं तुम्हें फूट के शोले नहीं भड़काने दूंगा।

तीनों : अच्छा?

भाईचारा : हां।

न हिंदू राष्ट्र,
न ख़ालिस्तान,
एक रहेगा हिंदोस्तान।

एक रहेंगे हिंदोस्तानी,
एक रहेगा हिंदोस्तान।
दीन-धरम के नाम पे दंगे कोई नहीं कर पाएगा,
अब के लड़ाई लानेवाला बचके न जाने पाएगा।
जो हमको लड़वाएगा मर जाएगा हैवान
न हिंदू राष्ट्र,
न ख़ालिस्तान,
एक रहेगा हिंदोस्तान।

(तीनों भाईचारे को मारकर धीरे-धीरे पीछे हटते हैं। एक-दूसरे पर नज़र पड़ती है। नारा लगाते हुए एक-दूसरे पर झपटते हैं। तभी सीटी बजाता रिंग मास्टर आता है।)

रिं.मा. : ए मैन क्या करटा है, ये क्या करटा है? हम टो टुम से मिलने के लिए मंत्री के पास से उठकर चला आया और टुम एक-दूसरे को मारटा है? बहुत ग़लट बाट है। टुम सोचटा है हम कौन है। बटाटा है। हम टुम्हारा डोस्ट है, टुम टीनों एक दूसरे का डुशमन हैं, लेकिन हम टुम टीनों का डोस्ट है। हम है ग्रेट अमेरिकन सर्कस का मैनेजर।

तीनों : ओह, गुड मारनिंग सर, गुड मारनिंग।

रिं.मा. : मॉरनिंग, मॉरनिंग। अच्छा, पहले अपना-अपना इंट्रोडक्शन दीजिए।

गुंडा-१ : माईसैल्फ़ सेनापति शिव शक्ति प्रसाद बजरंग भक्त।

रिं. मा. : सेनापति शिवा शाक्टि प्रसाड बैजरैंग बक्टा दैट्स व्हॉट आई कॉल एन इंप्रेसिव नेम। नाम सुनके ही पटा चल जाटा है कि आप बहुट महान आडमी होगा।

गुंडा-१ : थैंक यू सर, आपके सामने तो मैं कुछ भी नहीं हूं।

रिं.मा. : और आप?

गुंडा-२ : सिपाहसालारे आलम आदम अली ख़ान हबीबे इस्लाम।

रिं.मा. : सुबानल्ला, सुबानल्ला, आपका नाम बी बहुट इंप्रैसिव है। और आप?

गुंडा-३ : फ़ील्ड मार्शल करनैल सिंह आफ़ ख़ालिस्तान आर्मी।

रिं.मा. : ग्लैड टु मीट यू ऑल, अम आप टीनों को अमेरिकन सरकार का टरप से मुबारकबाड देना चाटा है।

तीनों : थैंक यू सर, थैंक यू।

रिं.मा. : *(तीनों के बीचोंबीच पहुंचता है)* अमने आपका स्पीचिज़ सुना, अम को पसंड आया। अम आपका मडड करना चाटा है।

तीनों : *(घुटनों पर गिरकर)* थैंक यू सर, थैंक यू। आप अगर हमारी मदद करें तो हम भारत का नक़्शा बदल के रख दें। हमारे पास सब कुछ है, काम करने की भावना है, पक्का इरादा है, विचारधारा है, बस पैसे की कमी है। आप हमें कुछ एड दे सकें।

गुंडा-१ : तो हम हर हिंदू के हाथ में एक त्रिशूल पकड़ा दें।

गुंडा-२ : हर मुसलमान के हाथ में एक ख़ंजर थमा दें।

गुंडा-३ : हर सिख के हाथ में एक स्टैनगन थमा दें।

तीनों : सर, आप हमारे माई-बाप हो, हमारे सब कुछ हो, हमें डॉलर दे दो, बस डॉलर दे दो।

रिं.मा. : *(बीच से निकलकर एक तरफ़ जाता है)* मिलेगा, ज़रूर मिलेगा। जिटना मांगोगे मिलेगा। लेकिन अमारा मडड करना होगा।

तीनों : *(उसके पीछे रेंगते हुए)* सर, हम आपके गुलाम हो जाएंगे, आप जो कहेंगे, वही करेंगे।

रिं.मा. : डेको, अम हैं 'इंटरनेशनल पशु प्रेमी संघ' का प्रेसिडेंट। टुमारे मुलुक में एक जानवर पाया जाता है जिसका नाम है सैम प्रो डाईएक्टा।

तीनों : सांप्रदायिकता?

गुंडा-१ : सर, मैं तो उस जानवर का सबसे बड़ा व्यापारी हूं, हर साल देश-भर में उसके लाखों पिल्ले बेचता हूं।

गुंडा-२ : सर, मैं भी कई पुश्तों से इसी धंधे में हूं। मैंने इस जानवर की नई-नई नस्लें बनाई हैं। मैं इनके जितना बड़ा व्यापारी तो नहीं हूं फिर भी देश के बहुत-से हिस्सों में मेरा कारोबार है।

गुंडा-३ : सर जी, मैं इस लाइन में नया आया हूं। लेकिन मैं मॉडर्न तरीक़ों से इस जानवर को पालता हूं। उसके लिए विदेशों से दवाईयां और चारा मंगवाता हूं। पंजाब के पूरे मार्किट पर मेरी कंपनी का कंट्रोल है।

रिं.मा. : गुड, गुड। अम चाटा है कि इस जानवर की अच्वी डेकबाल के लिए डेस को चार-पांच एरियाज़ में बांट दिया जाए। आप जैसे अनुबवी लोगों को उसका इनचार्ज बनाया जाए। इसीलिए हम मंत्री के पास गया टा। पर वो मानटा ही नहीं, कैटा है हम डेस को ऐसे टुकरे-टुकरे नहीं करने डेगा। वहां से हारकर हम आपका मडड मांगने आया है।

गुंडा-१ : अजी सर, आपने भी क्या बात कह दी। मंत्री की आप फ़िकर मत कीजिए। इलैक्शन के टाइम हमारे पास हाथ जोड़े आता है।

गुंडा-२ : कहता है औरों के लिए तो करते हो। हमारे लिए भी करो अपनी सांप्रदायिकता के करतब ताकि लोग ख़ुश होकर कुछ वोट हमें भी दें।

गुंडा-३ : और भी कई नेता हमारे पास आते हैं, उनके लिए भी हम काम करते हैं। ये मंत्री आपको ज़्यादा परेशान करेगा तो हम उससे कह देंगे कि भई आज से तेरे लिए करतब बंद। बस एक मिनट में ठीक हो जाएगा।

रिं.मा. : वैरी गुड, अमें आपसे ऐसा ही आसा ठा। टो आइए, अब कुछ काम का बाट हो जाए।

[जेब में हाथ डालता है, चारों सर जोड़कर बैठते हैं जमूरा आता है।]

जमूरा : *;ख़ून से लथपथ भाईचारे को देखकर]* अरे, ये कौन है। ख़ून से लथपथ है बेचारा। *;उठाता है।]* ओ भैया, किसने किया तेरा ये हाल? *;भाईचारा इशारा करता है।]* उन्होंने? क्यों तेरा क्या झगड़ा है उनसे? कौन है तू?

भाईचारा : *;उसे झटकाकर]* अपने भाईचारे को नहीं पहचानते? उससे पूछते हो कौन है तू? यह नौबत आ गई है? जो भाईचारा हमेशा से तुम्हारे साथ, तुम्हारे गली-मुहल्लों, तुम्हारे घर में रहा, जो तुम्हारे तीज-त्यौहारों, तुम्हारी ख़ुशी-ग़मी में बराबर का शरीक रहा, जिसका हाथ थामे तुमने ज़ुल्मो-सितम से लोहा लेना सीखा, आज उसी भाईचारे से पूछते हो कि तू कौन है?

जमूरा : भाईचारे, मुझे माफ़ कर दे। मैं तुझे पहचान नहीं सका। मुझे यक़ीन नहीं होता कि इस देश में तेरी यह हालत हो जाएगी? जो लोग तेरी ख़ातिर अपनी जान लुटा देते थे, अपनी जान पर खेल जाते थे, वह एक दिन तेरा यह हाल होने देंगे? चल तू मेरे साथ, जिन्होंने तेरा यह हाल किया है मैं उनको ज़िंदा नहीं छोडूंगा। *;चारों की तरफ़ लपकता है।]* ओ भाईचारे के दुश्मनो, इधर आओ, और भूखी जनता के बेटे का सामना करो। *;चारों पलटते हैं। जमूरा हक्का-बक्का रह जाता है।]* *;फिर रिं.मा. से]* आप? आप यहां कैसे पहुंच गए? मैंने आपको मंत्री के पास भेजा था।

रिं.मा. : मंट्री से अमारा काम नहीं चला, अम डायरेक्टली अपने डोस्टों के पास आ गया। ऐनी ऑबजेक्शन? कोई एटराज?

जमूरा : एटराज के बच्चे, मैं तेरा ख़ून पी जाऊंगा। अपने को पशुप्रेमी कहता है और भाईचारे के दुश्मनों के साथ सांठगांठ करता है?

[जमूरा आगे झपटता है।]

रिं.मा. : ए, टुम डेकटा क्या है? इसे मारो, मारो इसे।

[तीनों नारा लगाकर जमूरे पर झपटते हैं। जमूरा दर्द से चीख़ता है।]

भाईचारा : छोड़ दो, छोड़ दो उसे।

[तीनों जमूरे को बाहर फेंकते हैं और भाईचारे को घसीटकर ले जाते हैं। रिंग मास्टर हँसता है।]

रिं.मा. : लेडीज़ एंड जेनटलमैन, टो शुरू होटा है द ग्रेड अमेरिकन सर्कस।

[रिंग मास्टर जाता है। मदारी आता है।]

मदारी : बड़ी देर हो गई जमूरे को गए। अभी तक लौट के नहीं आया। चक्कर क्या है!

[जमूरा ख़ून से सना घिसटता हुआ आता है।]

जमूरा : उस्ताद जी, उस्ताद जी!

मदारी : अरे मेरे बच्चे, ये तुझे क्या हुआ? किसने तेरा ये हाल किया? कौन है वो, बता मुझे। बोल, बोल मेरे लाल, कुछ तो बोल।

जमूरा : उस्ताद, भाईचारा बुरी तरह जख़्मी है और क़ैद है। सेनापति शिवशक्ति, सिपहसालार आदम अली, फ़ील्ड मार्शल करनैलसिंह और, और अमरीकन सर्कस...

मदारी : भाईचारा उनके कब्ज़े में है?

जमूरा : हां।

मदारी : और तेरा ये हाल भी उन्हींने किया है?

जमूरा : हां।

मदारी : मेहरबानो, क़दरदानो, आपने सुना, आपका भाईचारा क़ैद है, उसके दुश्मनों का नाम भी आपने सुन लिया। जाइए, जाइए, अपने भाईचारे को छुड़ाकर लाइए। क्या? आप लोग नहीं जाएंगे? ऐसे ही खड़े रहेंगे? अरे अपने भाईचारे की रक्षा आप नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? किसके सहारे बैठे हैं आप लोग? किसकी आस लगाए हैं? क्या कहा, ये काम सरकार का है? अरे सरकार का तो न जाने क्या-क्या काम है। जानोमाल की रक्षा करना सरकार का काम है। कर पाती है? मंहगाई रोकना सरकार का काम है। रोक पाती है? रोज़गार देना, शिक्षा देना सरकार का काम है, दे पाती है? अरे इसी सरकार के सहारे बैठे रहे तो देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। ये लोग तो अब भी चुप हैं!

जमूरा : उस्ताद, इनके बस का कुछ नहीं है। यह ऐसे ही खड़े-खड़े तमाशा देखते रहेंगे। इनके भाईचारे का अपहरण होता रहेगा। मुहल्लों में त्रिशूल बंटते रहेंगे, जिहाद और ख़ालिस्तान के नारे लगते रहेंगे और ये लोग इन नारों की लपेट में आकर एक-दूसरे का ख़ून होते देखते रहेंगे, लेकिन कभी ख़ूनी हाथ नहीं रोकेंगे। उसके ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाएंगे। तुम बेकार में अपनी ताक़त खर्च कर रहे हो।

मदारी : नहीं, जमूरे नहीं, मुझे यक़ीन है कि ये उठेंगे। इन्हें एक बार बस भरोसा हो जाए कि इनके बचाए से भाईचारा बच सकता है, इनके रोके से देश टूटने से रुक सकता है, तो ये ज़रूर आगे आएंगे। चल, अभी मैं और तू इकट्ठे चलते हैं भाईचारे को ढूंढ़ने।

[दोनों जाते हैं। रस्सियों से जकड़ा भाईचारा आता है। उसकी रस्सियां थामे हैं[रिंग मास्टर और तीनों गुंडे।]

भाईचारा : मेरा जन्म हुआ था भाई
कितनी ही सदियों पहले,
कोई मुझको कहे एकता
कोई भाईचारा कह ले।
मेरे ही बूते वीरों ने
आज़ादी की जंग लड़ी,
मेरी ही ताक़त से डर
अंग्रेज़ी सेना भाग खड़ी।
आज अगर ये देश सलामत
है तो मेरे ही बल से,
आज अगर मैं मर जाऊं तो
गृहयु(होगा कल से।
आओ भारतदेश के वीरो
आ मुझको आज़ाद करो,
आओ मेरे बंधन तोड़ो
अमन को फिर आबाद करो।

o

जन नाट्य मंच का नया मंच नाटक *आज़ादी ने जब दस्तक दी* जल्द ही प्रकाशित हो रहा है। मानिनी चटर्जी की पुस्तक *डू एण्ड डाई* पर आधारित यह नाटक १९३०-१९३४ के दौरान चटगांव के इंक़लाबियों के जीवन पर आधारित है।